2

कुंदन हिंदी व्याकरण

अध्यापक सहायक-पुस्तिका

WOODS BOOK PUBLISHING

कुंदन हिंदी व्याकरण–2

1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. हिंदी 2. लिपि 3. देवनागरी **(ख)** 1. दूसरों 2. व्यवस्था 3. व्याकरण 4. मौखिक 5. क्रियाकलाप **(ग)** 1. 7 2. 7 3. 3 4. 3 **(घ)** 1. भाषा वह साधन है, जिसके द्‌वारा मानव अपने मन के भावों और विचारों को दूसरों तक पहुँचाता है और दूसरों के भावों एवं विचारों को ग्रहण करता है। 2. पंजाबी, हिंदी, गुजराती, मराठी, तमिल 3. भाषा के लिखने के ढंग को लिपि कहते हैं। 4. प्रत्येक भाषा की अपनी एक व्यवस्था होती है। इस व्यवस्था के कुछ नियम होते हैं। नियमों की इस व्यवस्था को व्याकरण कहते हैं। **करने की बारी–**मौखिक, लिखित, मौखिक

2. वर्ण तथा वर्णमाला

(क) 1. दो 2. गाँव 3. ज्ञ **(ख)** 1. वर्ण 2. स्वर 3. व्यंजन 4. द्‌वित्व 5. ऊष्म व्यंजनों **(ग)** 1. 7 2. 7 3. 3 4. 3 **(घ)** 1. बोलते समय हमारे मुँह से कुछ ध्वनियाँ निकलती हैं। इन ध्वनियों के लिखित रूप को वर्ण कहते हैं। 2. हिंदी वर्णमाला में वर्ण दो प्रकार के हैं–स्वर और व्यंजन 3. जब स्वरों को व्यंजनों के साथ मिलाकर लिखा जाता है, तो निर्धारित चिह्न मात्रा कहलाते हैं। 4. दो व्यंजन वर्णों के संयोग से बना व्यंजन संयुक्त व्यंजन कहलाता है। **करने की बारी–**ई, औ, ए, आ

3. शब्द रचना

(क) 1. शब्द 2. निरर्थक 3. यौगिक 4. पुर्तगाली **(ख)** 1. शब्द 2. तत्सम 3. तद्‌भव 4. रूढ़ **(ग)** 1. 3 2. 7 3. 7 4. 3 5. 7 **(घ)** 1. वर्णों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं। 2. संस्कृत के वे शब्द, जो हिंदी में उसी रूप में प्रयोग किए जाते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं; जैसे–अग्नि, सर्प, रात्रि, कार्य आदि। 3. संस्कृत के वे शब्द, जो कुछ रूप परिवर्तन के साथ हिंदी में प्रयोग किए जाते हैं, तद्‌भव शब्द कहलाते हैं; जैसे–आग, साँप, रात, काम आदि। 4. यौगिक शब्द दो शब्दों के योग से बनते हैं और दोनों खंडों का अपना-अपना अर्थ होता है; जैसे-सेना+पति=सेनापति, रसोई+घर=रसोईघर, पाठ+शाला=पाठशाला आदि। 5. दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बनने वाले वे शब्द जो किसी विशेष अर्थ का बोध कराते हैं, योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं। **करने की बारी–सार्थक शब्द–**कार, मेज़, बरकत, पाठशाला, खाना **निरर्थक शब्द–**वमरा, वूते, वरकत, वाय, वाना

4. संज्ञा

(क) 1. व्यक्तिवाचक 2. जातिवाचक 3. मधुरता 4. भाववाचक **(ख)** 1. संज्ञा 2. तीन 3. व्यक्तिवाचक 4. भाववाचक **(ग)** 1. 3 2. 3 3. 3 4. 7 **(घ)** 1. जो शब्द किसी व्यक्ति

(प्राणी), वस्तु, स्थान या भाव के नाम का बोध कराता है, उसे संज्ञा कहते हैं। 2. संज्ञा के तीन मुख्य भेद हैं–1. व्यक्तिवाचक संज्ञा, 2. जातिवाचक संज्ञा, 3. भाववाचक संज्ञा 3. जातिवाचक संज्ञा के दो उदाहरण–लड़का, नदी। 4. व्यक्तिवाचक संज्ञा के तीन उदाहरण–महात्मा गाँधी, आगरा, गंगा। 5. भाववाचक संज्ञा के दो उदाहरण–ईमानदारी, बुढ़ापा। **करने की बारी–**स्वयं करे।

5. लिंग

(क) 1. दो 2. बेटा 3. बहन **(ख)** सेठ, लेखक, मालिक, दूल्हा, सुनार, शिक्षक **(ग)** ऊँटनी, बालिका, बहन, घोड़ी, सेविका, गाय **(घ)** 1. संज्ञा शब्द के जिस रूप से उसके पुरुष जाति या स्त्री जाति के होने का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं। 2. जिन शब्दों से स्त्री जाति का बोध होता है, वे स्त्रीलिंग कहलाते हैं। 3. जिन शब्दों से पुरुष जाति का बोध होता है, वे पुल्लिंग कहलाते हैं। **करने की बारी–**स्त्रींलिंग, स्त्रीलिंग, पुल्लिंग, स्त्रीलिंग

6. वचन

(क) 1. ये दोनों 2. आँखें **(ख) एकवचन**–पत्ता, खिड़की, माला, बिल्ली, मछली **बहुवचन–**सब्ज़ियाँ, कमरे, गुब्बारे, गाजरें, गमले **(ग)** 1. घोड़ा-घोड़े 2. कौआ-कौए 3. ऋतु-ऋतुएँ 4. रुपया-रुपये 5. कन्या-कन्याएँ **(घ)** 1. शब्द के जिस रूप से किसी व्यक्ति या वस्तु के एक होने का पता चले, उसे एकवचन कहते हैं, जैसे–घोड़ा, खिड़की, गाय, बकरी आदि। 2. शब्द के जिस रूप से व्यक्तियों या वस्तुओं के एक से अधिक होने का पता चले, उसे बहुवचन कहते हैं, जैसे–घोड़े, खिड़कियाँ, गायें, बकरियाँ आदि। **करने की बारी–**एकवचन, बहुवचन, एकवचन, एकवचन, बहुवचन

7. कारक

(क) 1. के द्वारा 2. ये सभी **(ख)** 1. में 2. पर 3. से 4. के लिए **(ग)** 1. ने 2. को 3. के लिए 4. में, पर 5. हे, अरे, ओ **(घ)** 1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से, उसका संबंध क्रिया या वाक्य के अन्य शब्दों के साथ जाना जाए, उसे कारक कहते हैं। 2. कारक आठ प्रकार के होते हैं–1. कर्ता 2. कर्म 3. करण 4. संप्रदान 5. अपादान 6. संबंध 7. अधिकरण 8. संबोधन। **करने की बारी–**स्वयं करें।

8. सर्वनाम

(क) 1. यह 2. गिलास 3. पुरुषवाचक 4. प्रश्नवाचक **(ख)** 1. मैं 2. तुम 3. वह 4. कोई 5. कुछ **(ग)** 1. 3 2. 7 3. 7 4. 3 **(घ)** 1. जो शब्द संज्ञा के स्थान पर आते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं। 2. सर्वनाम के छह भेद हैं–(1) पुरुषवाचक सर्वनाम (2) निश्चयवाचक सर्वनाम (3) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (4) प्रश्नवाचक सर्वनाम (5) संबंधवाचक सर्वनाम (6) निजवाचक सर्वनाम 3. अपने लिए 'आप' 'खुद', 'स्वयं' आदि सर्वनाम शब्दों का प्रयोग

करते हैं। **करने की बारी–**स्वयं करें।

9. विशेषण

(क) 1. विशेषण 2. चार 3. परिमाणवाचक **(ख)** 1. खट्टे-अंगूर 2. चार-पुस्तकें 3. कड़वा-करेला 4. हरी-घास 5. ईमानदार-आदमी **(ग)** 1. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। 2. विशेषण के चार भेद हैं–(1) गुणवाचक विशेषण (2) संख्यावाचक विशेषण (3) परिमाणवाचक विशेषण (4) सार्वनामिक विशेषण 3. जिन शब्दों की विशेषता बताई जाती है, उन्हें विशेष्य कहा जाता है। **करने की बारी–**लाल खट्टा, ठंडी मीठी, जंगली काली

10. क्रिया

(क) 1. क्रिया 2. ना 3. खुशी 4. दो **(ख)** 1. सिल रहा है। 2. उड़ रहे हैं। 3. सो रही है। 4. बना रहा है। 5. उड़ा रहा है। **(ग)** 1. जिन शब्दों से किसी कार्य के करने या होने का पता चलता है, उन्हें क्रिया कहते हैं जैसे–खाना, पीना, चलना, होना, निकलना। 2. पुस्तक पढ़ना, दूध पीना, गेंद खेलना 3. रोना, हँसना, दौड़ना 4. जिन क्रियाओं के साथ कर्म होता है, उन्हें सकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे-(क) सचिन पुस्तक पढ़ रहा है। (ख) मोहन दूध पी रहा है। जिन क्रियाओं को कर्म की आवश्यकता नहीं होती, उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे-(क) बालक दौड़ रहा है। (ख) गीता हँस रही है। **करने की बारी–**बंदर केला खा रहा है। मोर नाच रहा है। लड़का फुटबॉल खेल रहा है। बालक सो रहा है। लड़का पढ़ रहा है। पुजारी पूजा कर रहा है।

11. काल

(क) 1. क्रिया के होने के समय को 2. तीन 3. भविष्यत् काल **(ख)** 1. भूत काल 2. वर्तमान काल 3. भूत काल 4. भविष्यत् काल **(ग)** 1. क्रिया के जिस रूप से उसके होने या करने के समय का पता चले, उसे काल कहते हैं; जैसे-'लिखता है', 'खा रहा था', 'जाएगा' काल हैं। 2. (क) रीता पढ़ रही है। (ख) मैं अभी जाता हूँ। रवि लिख रहा है। 3. (क) मोहन ने पुस्तक पढ़ी। (ख) किशन पुस्तक पढ़ रहा था। (ग) नेहा खेल रही थी। 4. (क) वे दिल्ली जाएँगे। (ख) नेहा गाना गाएगी। (ग) लड़के फुटबॉल खेलेंगे। **करने की बारी–**स्वयं करें।

12. विलोम शब्द

(क) 1. दुर्गंध 2. प्यास 3. असत्य **(ख)** पुण्य, पराया, विषाद, रंक, अपकार, बुराई, विष, नरक **(ग)** 1. जो शब्द एक-दूसरे का विपरीत (उल्टा) अर्थ बताते हैं, उन्हें विलोम शब्द कहते हैं। 2. विलोम शब्द का एक अन्य नाम विपरीतार्थी शब्द है। **करने की बारी–**1. काला-गोरा 2. अच्छा-बुरा 3. मित्र-शत्रु 4. सरल-कठिन 5. जीत-हार

13. पर्यायवाची शब्द

(क) 1. भागीरथी 2. सुमन 3. ये दोनों **(ख)** 1. आकाश-नभ 2. दु:ख-वेदना 3. पृथ्वी-भूमि 4. अमृत-पीयूष 5. दूध-क्षीर **(ग)** 1. एक समान अर्थ वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं। 2. पर्यायवाची शब्द का अन्य नाम समानार्थी शब्द है। **करने की बारी–**स्वयं करें।

14. वाक्यांश के लिए एक शब्द

(क) 1. धनी 2. परिश्रमी 3. अनुज **(ख)** 1. अनेक शब्दों के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले एक शब्द को वाक्यांश के लिए एक शब्द कहते हैं। 2. वाक्यांश के लिए एक शब्द का अन्य नाम 'अनेक शब्दों के लिए एक शब्द' है। **करने की बारी–**श्रमिक, वक्ता, कुम्हार

15. विराम-चिह्न

(क) 1. ? 2. ! 3. अर्ध विराम **(ख)** 1. लगातार परिश्रम करते रहो। 2. राधा बोली, ''भूख लगी है।'' 3. कछुआ धीरे-धीरे चलता है। 4. क्या तुम्हें पेंसिल चाहिए? 5. हाय! अब मैं क्या करूँ। **(ग)** 1. लिखते समय अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं। 2. हम लिखते समय अपने कथन पर बल देने, या कथन को समझाने व स्पष्ट करने के लिए विराम चिह्नों का प्रयोग करते हैं। 3. सामान्य कथन वाले सभी प्रकार के वाक्यों के अंत में पूर्ण विराम लगाया जाता है; जैसे–(क) तुम जाओ। (ख) उसने कहा, कि सुरेश कल आएगा। (ग) मैं कल आऊँगा और महेश आज आएगा। **करने की बारी–**स्वयं करें।